ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

दलित उत्थान में माननीय कांशीराम की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ॰ महेश,
राजनीतिक विज्ञान,
सी 175, नई सीमापुरी, दिल्ली -110095

सारांश

आजादी का सूरज उगतेउगते-, बाबा साहब डॉअम्बेडकर की प्रेरणा से दलितों के भीतर भी चेतना का . सूरज और अधिक तेजी से उगने लगा था । हालांकि चेतना उनमे पहले भी थी, पर समयसमय पर वह - सनातनियों द्वारा कुंद कर दी जाती थी । दलित समाज के लोग क्षुब्ध हो जाते थे, कुंठित हो जाते थे, और उनमे से कुछ थकहार कर अपने नसीब को कोसने लगते थे । दुनिया के किसी भी समाज का इतिहास - संघर्ष ही रहा है । यह बात अलग है कि किसी जाति, वर्ण या नस्ल का सामाजिक तथा राजनीतिक संघर्ष किसी मोड़ पर विरोधाभासी बन गया हो । इस संघर्ष के रूप अलगअलग हो सकते है-, लेकिन संघर्ष के बिना समाज का विकास संभव नहीं है । वही समाज को गति प्रदान करता है और उसी से प्राप्त गति के कारण सनातन मूल्यों की जगह नए जीवन मूल्य विकसित होते है । समाज में इसी संघर्ष के कारण नए राजनीतिक दलों का उदभव भी होता है । अर्थात ऐसी व्यवस्था किसी धर्म व जाति के खिलाफ नहीं होगी, बल्कि देश के हित में होगी । इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर, कांशीराम कहते है, यदि ब्राह्मणवादी समाज के लोग बहुजन समाज पार्टी में शामिल होना चाहते है और बहुजन समाज पार्टी के मुख्य उद्देश्य को पूरा कराने में अपना सहयोग भी देना चाहते है, तो ऐसे लोगों के लिए बहुजन समाज पार्टी में प्रवेश के लिए हमेशा दरवाजे खुले हुये है तथा ऐसे लोगों को पार्टी में पूरा आदरसम्मान दिया जायेगा । इतना ही नहीं - बल्कि उन्हे बहुजन समाज पार्टी के संगठन और सरकार बनने पर सरकार में उनके कार्यों की क्षमता के अनुसार पूरा अवसर प्रद ान किया जाएगा तथा इनके साथ कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा । कांशीराम के तीखे तेवरो ने ब्राहणवाद को चुनौती दी । यही वजह है कि आरएस जैसे संगठन को यह बयान जारी .एस. करना पड़ा था कि कांशीराम का आन्दोलन हिन्दू कट्टरपंथियो के लिए सबसे बड़ा खतरा है ।

संकेतशब्द :हिन्दू कट्टरपंथियो, उत्तराधिकार, हुक्मरान, लोकानुकम्पाय, संकीर्ण मानसिकता, संवैधानिक दर्जा_

परिचय

डॉ॰ बाबा साहेब अम्बेडकर दलित समाज मे एक मसीहा और भगवान माने जाते है । वह दलितों के लिए अंत तक लड़ते रहे और सारी बाधाओं को पार करके, स्वतंत्र भारत के संविधान में दलितों एंव शोषितों को संवैधानिक दर्जा दिलाने मे कामयाब हुये । डॉ॰ बाबा साहेब के आक्समिक निधन से दलितो एंव शोषितों के उत्थान मे कार्य करने वाले एक महापुरुष का अंत हुआ और दलित समाज फिर किसी नये पुरुष का इंतजार करता रहा था ।[1]

14 मार्च,को पंजाब प्रांत के रोपड़ जिले 1934 के खवासपुर गाँव मे एक अद्वितीय बालक का जन्म हुआ, उनकी माता बिशन कौर और पिता हरिसिंह के घर जन्मे इस बालक का नाम कांशीराम रखा गया ।

कांशीराम एक होनहार छात्र थे । तत्कालीन समय मे रोपड़ क्षेत्र के रामदासियाँ सिंख पंथ मे बीसी तक की पढ़ाई पूरी करने वाले .एस. कांशीराम एकमात्र छात्र थे ।[2]

अपने बाल्यकाल और छात्र जीवन को याद करते हुए कांशीराम कहते है कि “मै स्वंय जातिवाद का शिकार तो नहीं हुआ मगर मेरे इर्दगिर्द ऐसे - कई लोगो को देख रहा था, जो इस विषमतावादी व्यवस्था के शिकार बन कर करुणाजनक ज़िंदगी बसर कर रहे थे । मुझे खीज होती थी इस बात पर, वें भले ही मेरे रिश्तेदार नहीं थे, मगर वें भी हमारे समाज के लोग थे । उन पर जुल्म केवल इसलिए ढाये जाते थे क्योंकि वें गरीब और निरक्षर थे । यह सब देख कर दिल ही दिल मे, मै बेचैन हो जाता था ।” वर्ष में पंजाब के 1956 सी .एस.जिला रोपड़ के पब्लिक कॉलेज से बी करने के बाद प्रतिभाशाली नवयुवक कांशीराम ने “ में 1957 एक वर्ष बाद हीसर्वे ऑफ इंडिया” की परीक्षा पास कर ली थी । उन्हे देहारादून बुलाया गया और ट्रेनिंग पूरी भी नहीं हो पाई थी कि सभी ट्रेनिंग कर्ताओं को एक बॉण्ड भरने के लिए कहा गया । इस बॉण्ड मे एक निश्चित समय सीमा के लिए “सर्वे ऑफ इंडिया” की नौकरी करना अनिवार्य था । सभी ट्रेनिंग कर्ताओं ने उस पर हस्ताक्षर किए, लेकिन जन्मजात “आजाद” कांशीराम ने हस्ताक्षर करने से इंकार करते हुए कहा कि “मै सरकार का बंधुआ मजदूर बनने से बेहतर समझता हूँ कि इस नौकरी को छोड़ दूं । इस प्रकार कार्य भार संभालने से पहले ही ट्रेनिंग काल में ही उन्होने वह नौकरी छोड़ दी । दलित राजनीति की प्रयोगशाला में होता वही है, जो होना होता है । नियति को कुछ और ही मंजूर था । वास्तव में उन्हे तो कहीं और ही जाना था । कुछ ही दिनो के बाद उनकी पूना में नौकरी लग गई । पूना में वे “किर्की एक्सप्लोसिव रिसर्च एंड डवलपमेंट लेबोरेट्री (एल.डी.आर.ई) ” मे अनुसंधान सहायक के पद पर नियुक्त हुए । लेकिन वहाँ घटी एक घटना ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी । वास्तव में हालत उनको विज्ञान की प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि

दलित राजनीति की प्रयोगशाला महाराष्ट्र में ले आए । इसी प्रयोगशाला में कभी बाबा साहब डॉ . अम्बेडकर ने अपना ऐतिहासिक मिशन चलाया था तथा उनसे पहले भी सामाजिक परिवर्तन तथा क्रांति के बिगुल वहां बजते थे ।[3]

महाराष्ट्र में दलितों के जागरण को देखते हुए ईएल में बुद्ध जयंती तथा बाबा साहब .डी.आर. अम्बेडकर जयंती पर छुट्टी होती थी । लेकिन कुछ ब्राह्मणवादी विचारधारा के सांप्रदायिक अधिकारियों ने इन दोनों छुट्टियों को खत्म कर दिया था । इन अधिकारियोें ने अपनी बीमार, भ्रष्ट तथा संकीर्ण मानसिकता के चलते बुद्ध जयंती को दीपावली में समाहित कर दिया तथा अम्बेडकर जयंती को तिलक जयंती में परिवर्तित कर दिया । ईएल में इसका काफी विरोध .डी.आर. हुआ । चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी दीनाभाना ने इस घटना का लिखित में विरोध कियातथा इस भेदभावपूर्ण घोषणा को वापिस लेने की जोरदार मांग की । इस संवैधानिक मांग के एवज में ऊंची कुर्सियों पर बैठे जालिम ब्राह्मणवादियों ने उस बेचारे गरीब की नौकरी ही छीन ली । उन्होने बुद्ध जयंती तथा अम्बेडकर जयंती के अवकाश के लिए आंदोलन शुरू कर दिया ।

कांशीराम उस संस्थान में एक अधिकारी की हैसियत से काम कर रहे थे । लेकिन इन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के दिलचस्प आंदोलन पर कड़ी नज़र रखे हुए थे । वे निष्पक्ष भाव से दिन-प्रतिदिन बदलते इस आंदोलन के समीकरणों को निहार रहे थे|

कांशीराम ने दीनाभाना का साथ देने का फैसला कर लिया था, और कहा जो अपने अधिकारों के लिए बहादुरी से लड़ते है, वे सभी मेरे अपने है । अब यह लड़ाई तुम्हारी ही नहीं, मेरी भी है, हम सब की है । उस रात कांशीराम सो नहीं पाए । बारबार एक ही सवाल मन में गुंजता क्या हम - इसी तरह आजाद भारत में अपने महापुरुषों, मसीहाओं को अपमानित करवाते रहेंगे तथा खुद भी प्रताड़ित होते रहेंगे । आखिर इस अंधेरे से उजाले तक जाने का रास्ता कौन सा है-? इन्ही सवालों की उधेड़बुन के बीच पपीहा बोल उठा । - सुबह हो गई उसके बाद कांशीराम दीनाभाना के रात भर जाग कर अध्ययन करने -केस का रात लगे ।

कांशीराम इस केस को लेकर रक्षा मंत्रालय पहुंचे । उस समय यशवंतराव चव्हाण रक्षामंत्री थे । इस केस की उच्च स्तरीय जांच कारवाई गई । डिफेंस मिनीस्ट्री ने इंसाफ किया । दोषी अधिकारियों की खिचाई की गई । बुद्ध तथा अम्बेडकर जयंती की छुट्टियाँ फिर से घोषित की गई । दीनाभाना की नौकरी बहाल की गई, सभी दलित कर्मचारी खुश थे । चारों तरफ कांशीराम के नाम की चर्चा होने लगी । दीनाभाना जिंदाबाद साब कांशीराम जिंदाबाद के ! नारों से पूरा परिसर गूंज उठा राष्ट्रव्यापी बेइज्जती से खिसियाए हुए ब्राह्मणवादी

अधिकारियों को जहर का घूंट पीना पड़ा । अब उनकी आंखों में कांशीराम भी खटकने लगे ।

कांशीराम ने इस समाज को जागृत एंव संगठित करने का बीड़ा उठाया । वें जानते थे कि जातिवाद पर आधारित इस गैरबराबरी की - व्यवस्था को बदलना आसान नहीं है । पूर्ण विषमता को परम समानता में बदलने के लिए समर्पण की जरूरत है। सच्ची लगन, निष्ठा, ईमानदारी और संगठित शक्ति का सही दिशा में उपयोग किया जाये, तो इस विषमतावादी व्यवस्था को जड़ से उखाड़ा जा सकता है ।[4]

उन्होने पाया कि अनुसूचित जातियों, जनजातियों, पिछड़े वर्गो तथा अल्पसंख्यक कर्मचारियों का जब तक शक्तिशाली संगठन नहीं बनता, तब तक इन वर्गो की कोई सुनवाई नहीं हो सकती । वे इन वर्गो के कर्मचारियों का संगठन बनाने में जुट गए । देश भर में घूम-घूम कर, रातरात भर जग कर-, उन्होने एक संगठन खड़ा किया – बामसेफ ।[5]

बामसेफ उस संगठन का नाम है, जिसकी नींव कांशीराम जी ने में अपनी नौकरी से 1964 त्यागपत्र देने के बाद ही रख दी थी । लेकिन इसका विधिवत गठन डॉअम्बेडकर के . दिसंबर 6 परिनिर्वाण दिवस, 1978 को हुआ था बामसेफ का अर्थ है दी ऑल इंडिया बेकवर्ड एससी., एसटी., ओबीसी एंड माइनारिटी . कम्यूनिटीज एम्प्लोइज़ फेडरेशन । इस संगठन का उद्देश (एफ.ई.सी.एम.ए.बी)्य न केवल इन वर्गो के कर्मचारियों को संगठित करके अपनी मांगो व अधिकार के प्रति जागरूक करना था, बल्कि उन्हे अपने समाज के प्रति अपने दायित्वों से अवगत करवाना भी था ।

दलित, पिछड़े तथा अल्पसंख्यक कर्मचारियों का संगठन बनाने के बाद कांशीराम ने समाज के अन्य लोंगों के लिए भी एक संगठन खड़ा करने की योजना बनाई । क्योकि सरकारी कर्मचारी तीव्र आंदोलन नहीं कर सकते थे और खुली तरह से राजनीति में भी हिस्सा नहीं ले सकते थे । अतः इसी कमी की पूर्ति के लिए “डी”फोर.एस. नामक संगठन को खड़ा किया गया । इसकी स्थापना बामसेफ के गठन के 6 वर्ष बाद 3 दिसम्बर, 1981 को की गई ।[6]

दिसम्बर 6,को उन्होने दलित शोषित 1981 4 एस-डी) समाज संघर्ष समिति) का गठन किया और लोकप्रिय नारा दिया “ –ठाकुर, ब्राहाण, बनिया छोड़ बाकी सब है डी”4 एस- । डी द्वारा किए गए तीन महत्वपूर्ण कार्य थे 4 एस- – पहियों पर अम्बेडकर मेलें का आयोजन, तीन हजार किमीतक साइकिल रैली निकालना और . जनता की संसद का गठन करना ।[7]

बामसेफ ने ही में बहुजन समाज पार्टी को 1984 14 जन्म दिया । बाबा साहब के जन्म दिवस अप्रैल, 1984 में कांशीराम ने दिल्ली में बहुजन समाज पार्टी के गठन की घोषणा कर दी । 22

जून 24 से,तक लालकिले के सामने वाले 1984 मैदान में पार्टी का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ । जब बहुजन समाज पार्टी ने चुनाव लड़ना शुरू " कर दिया तो उन्होनेएक नोट, एक वोट "नारा देकर नोट और वोट खींचे, धीरेधीरे उनकी - लोकप्रियता बढ़ी और समर्थन उन्हे सिक्कों में तौलने लगे । इस पैसे का इस्तेमाल उन्होने चुनाव लड़ने के लिए किया, उन्होने खुद तो कभी राजनीति नहीं की लेकिन उन्होने हजारों लोगों को राजनीति में आने का मौका दिया । उनकी नीतियों को कई लोग बेहद महान मानते है, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर के बाद उन्होने ही देश के दलितों को सही मायनों में एक करने का सपना सच कर दिखाया ।

बहुजन समाज पार्टी का दलितोंत्थान के लिये उद्देश्य

बहुजन समाज पार्टी का मुख्य उद्देश्य, यहाँ सामाजिक परिवर्तन एवं आर्थिक मुक्ति लाना है । इस उद्देश्य के तहत ही यह पार्टी इस देश में ब्राह्मणवाद के आधार पर बनाई गई सामाजिक व्यवस्था को, जो गैरबराबर है-, जिसके कारण ही यहाँ आर्थिक गैरबराबरी भी है-, इसे बदलकर, समतामूलक समाज व्यवस्था बनाना चाहती है, जिससे मानवता एवं इन्सानियत हो । इस किस्म की सामाजिक व्यवस्था समस्त समाज के हित में है, जिससे यहाँ समाज में पनपी छुआछूत ऊंचपात की खाई को -नीच व जात-हमेशा के लिए खत्म किया जा सकता है -हमेशा ।[8]

इस पार्टी ने यहाँ बहुजन समाज को बनाने के लिए, इन्हे इनके वास्तविक स्वरूप के इतिहास की जानकारी दी और ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था के तहत जाति के आधार पर कई हजार टुकड़ों में बाटें गये बहुजन समाज के लोगों में आपसी भाईचारा पैदा करके, उन्हे अल्पजन से "बहुजन" बनाने की कोशिश की, जिसमे कुछ कामयाबी भी मिली है तथा देश के जिस प्रदेशो में बहुजन समाज कुछ बनकर तैयार हो गया है, तो ऐसे प्रदेशों से इस पार्टी ने संसद और विधानसभा में अपने कुछ उम्मीदवार भी जीता कर भेजे है । इतना ही नहीं, बल्कि इस पार्टी ने देश के सबसे बड़े प्रदेश, उत्तर प्रदेश में चार बार अपनी सरकार बनाकर, अनेकों महत्वपूर्ण फैसले भी बहुजन समाज के हितों के लिये किये गये है । साथ ही, यह पार्टी, इस लक्ष्य को सामने रखकर बहुजन समाज को तैयार करने की कोशिश मे लगी हुई है कि जल्दी ही, बहुजन समाज में जन्मे महापुरुषों का सपना साकार हो जाये ।

बहुजन समाज पार्टी का उत्तर प्रदेश के चुनावों में गठबंधन

भाजपा ने की (बसपा) में कांशीराम 1995 सरकार को बिना शर्त बाहर से समर्थन देना स्वीकार किया था । उस समय चुनाव पूर्व सीटों

के बटवारे हेतु गठबंधन जैसी कोई बात नहीं थी, न ही बसपा द्वारा सरकार बनाने के बाद कोई न्यूनतम साझा कार्यक्रम जारी किया गया था जैसे कि चुनावी गठबंधन में आम तौर पर होता है । अतः कांशीराम ने भाजपा का बाहरी समर्थन लेकर बसपा की सरकार बनाई और मायावती को देश के किसी भी राज्य की पहली दलित महिला मुख्यमंत्री बनाया था ।

एवं भाजपा के (बसपा) की तरह कांशीराम 1995 दूसरे दौर क्ी साझा सरकार अप्रैल,में 1997 बनी और यह गठबंधन मात्र छ महीने में, सितम्बर, 1997 में ही धराशायी हो गया । इस दौर में यह शर्त थी कि बसपा एवं भाजपा की ओर से छः छः महीने के लिए मुख्यमंत्री बनाये जायेंगे और इसके तहत पहले दौर में मायावती, कांशीराम द्वारा छः माह के लिए मुख्यमंत्री बनायी गयीं । गद्दी पर बैठने के साथ ही मायावती ने एक बार फिर सबके चिरपरिचित डर को झूठा साबित कर दिया । जैसे ही बसपा ने चुनाव के पश्चात गठबंधन की सरकार बनाई । वैसे ही समाजशास्त्रियों शिक्षाविदों, राजनीतिज्ञों, अन्य सामान्य एवं दलित बुद्धिजीवियों ने बसपा पर आरोप लगाना आरंभ कर दिया कि अब बसपा का भगवाकरण हो गया है । परंतु कांशीराम और मायावती ने इस दौरान बसपा की वैचारिक पृथक छवि को बनाये रखा और बिना किसी भय के अपना एजेंडा लागू किया ।

वर्ष में हुए विधानसभा चुनाव में एक बार 2002 फिर किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत हासिल नहीं हुआ और काफी प्रयासों के बाद भी जब कोई सरकार नहीं बन सकी तो आठ मार्च,से 2002 राज्य में एक बार फिर राष्ट्रपति शासन लगा तक लागू रहा । 2002 दिया गया जो तीन मई भाजपा के सहयोग से राज्य में कांशीराम गठबंधन सरकार तीन मई (बसपा),को 2002 सत्ता में आई और मायावती, कांशीराम द्वारा तीसरी बार राज्य की मुख्यमंत्री बनी । इसके बाद फिर वही आलोचनाओं का बाजार गर्म हो गया । आरोपों और आलोचनाओ के इस चरण में सर्व प्रथम वही पुराना आरोप लगाया गया कि क्या बसपा अपनी विचारधारा छोड़ रही है ? लेकिन बसपा ने बिना किसी राजनैतिक दबाव के सोलहा महीने सरकार चलायी और निर्भीकता से अपना व्यक्तिगत एजेंडा लागू किया ।

कांशीराम जीवन भर “अनागरिक” की तरह ही रहे । पारिवारिक झंझटों से अलग रहे । देश के कोने–कोने में भ्रमण करते रहे । यह सब वे बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोकानुकम्पाय की भावना से प्रेरित होकर ही कर रहे थे ।
अगस्त 18,को गुजरात के राजकोट 2002 स्थित ढेबर चौक की रैली में कांशीराम ने कहा – हमारा पहला प्लान है देश के सबसे बड़े प्रदेश में हुक्मरान बनाने का (उत्तर प्रदेश), दूसरा प्लान है – सम्पूर्ण देश में बहुजन समाज को हुक्मरान समाज बनाने का और तीसरा प्लान है – इस देश को बौद्धमय बनाने का ।”

इस देश को बौद्धमय करने का महान कार्य वे अक्टूबर,को करने वाले थे लेकिन विशाल 2006 सपने के आगे उम्र बौनी पड़ गई । वें अम्बेडकर –बनतेबनते चूक गए । सितम्बर 13,को 2003 ही उन्हें ब्रेन स्ट्रोक हुआ और वे चलने, फिरने तथा बोलने में अक्षम हो गए और अक्टूबर 9, 2006 को रात के 12.पर परिनिर्वाण को 30 – प्राप्त हो गए । अंतिम दिनों में वे कह गए थे मेरा अंतिम संस्कार बौद्ध रीति से करना । इस प्रकार यदि हम कांशीराम की कार्य शैली को समझते हुए उनके बताए हुए रास्ते पर चलेंगे तो हमारी आने वाली पीढ़ियां इस देश की हुक्मरान भी बनेगी और हमारे महान पुरखो का बौद्ध धर्म भी फैलेगा, बाबा साहब का अधूरा मिशन भी पूरा होगा ।[9]

कांशीरामजी ने मायावती को अपने अस्वस्थ रहने के कारण दिनांक 23.09.को अपने 2003 उत्तराधिकार के रूप में बहुजन समाज पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना ।

निष्कर्ष

अतः यह कहा जा सकता है कि दलितों की जो दयनीय स्थिति थी उसमें दलित सुधारकों, कांशीराम एवं सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप (बसपा) क्रमशः सुधार हुआ । किन्तु अभी भी समानता के दृष्टिकोण से दलितों की स्थिति संतोषजनक नहीं है । दलित समाज की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ता है । तथा सवर्णों की मानसिकता में बदलाव आना आवश्यक है । साथ ही दलितचेतना भी सकारात्मक दिशा में अग्रसर होनी चाहिए ।

संदर्भसूची :

1. नैमिशराय,मोहनदास : कांशीराम का जीवन संघर्ष, कान्ती पब्लिकेशन507 / 12साउथ गावंडी दिल्ली- पृष्ठ स० -13
2. कमलकान्त : दलितों के मसीहा कांशीरम, राजा पाकेट बुक्स बुराड़ी दिल्ली -पृष्ठ स० – 7
3. सिंह,सतनाम बहुजन नायक कांशीराम :, सम्यक प्रकाशन 32/पश्चिम पूरी नई 3 ०पृष्ठ स -दिल्ली- 22
4. एकांशीराम के साक्षात्कार : अकेला.आर., मानक पब्लिकेशन प्रासुभाष चौक .लि. 17 – ०पृष्ठ स -लक्ष्मी नगर दिल्ली
5. सिंह,सतनाम बहुजन नायक कांशीराम :, सम्यक प्रकाशन 32/पश्चिम पूरी नई 3 26 – ०पृष्ठ स -दिल्ली
6. सिंह,सतनाम बहुजन नायक कांशीराम :, सम्यक प्रकाशन 32/पश्चिम पूरी नई 3 33 – ०पृष्ठ स -दिल्ली
7. 7 . जागरण जंक्शन आपकी आवाज,आपका ब्लॉग : पॉलिटिकल एक्सप्रेस 09 अक्टूबर 2012
8. सेंगर,शैलेन्द्र मायावती बहुजन :से सर्वजन तक, प्रकाशक बुक ट्री पब्लिशिंग

ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

1376,आत्माराम बिल्डिंग कश्मीरी गेट,दिल्ली101 – ०पृष्ठ सं -

9. कुमार, अनुज : बहुजन नायक कांशीरम के अविस्मरियणी भाषण, गौतम बूक सेन्टर 1/ 4446गली न०-4 नजदीक अम्बेडकर गेट रामनगर एक्स मंडोली रोड़ शाहदरा दिल्ली - पृष्ठ स० 69 –

Copyright © 2015 Dr. Mahesh. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.